जनक आ याज्ञवल्क्य

जनक

मिथिलामे अति प्राचीनकालसँ लऽ महाभारत काल धरि जाहि वंशक शासन छलैक से जनक राजवंश कहबैत छल। एहि वंशक राजालोकनि अपन उपाधि जनकक व्यवहार करैत छलाह। निमि जनक एहि राजवंशक संस्थापक छलाह। ई ब्रह्माक पाँच पीढ़ी नीचा छलाह। ब्रह्माक पुत्र मरीचि, मरीचिक पुत्र कश्यप, कश्यपक पुत्र विश्वनाथ, विश्वनाथक पुत्र वैवस्वत आ वैवस्वतक पुत्र छलथिन इक्ष्वाकु। इक्ष्वाकुक तीन गोट प्रख्यात संतानमे निमि जनक सेहो छलाह।

राज्यक स्थापनाक बाद निमि एक गोट यज्ञ करऽ चाहैत छलाह। यज्ञ एक हजार वर्ष धरि चलितैक। ओ यज्ञक हेतु पुरोहितक रूपमे वशिष्ठक वरण करऽ चाहैत छलाह। मुदा ओहि समय वशिष्ठ इन्द्रक ठानल यज्ञमे पुरोहितक काज पर छलाह। निमिक निवेदन पर वशिष्ठ अपन व्यस्तताक स्थिति देखा देलथिन आ कहलथिन जे ओ इन्द्रक यज्ञ-समाप्तिक बादे हुनक यज्ञ करा सकैत छथिन। निमिकेँ ओतेक कालावधि धरि यज्ञ रोकने रहबाक धैर्य नहि रहलनि। ओ गौतमकेँ अपन पुरोहित बना यज्ञ ठानि देलनि। एमहर जखन इन्द्रक यज्ञ समाप्त भेलनि तँ वशिष्ठ निमिक यज्ञ आरम्भ करयबाक हेतु हुनका ओहिठाम गेलाह। ओहिठाम पूर्वहिसँ यज्ञ होइत देखि हुनका बेस क्रोध भेलनि। ओ निमि के शाप दऽ देलथिन–'अहाँ बिनु देहक भऽ जाउ।' शापक फलस्वरूप निमि लगले मृत्युकेँ प्राप्त कऽ गेलाह। हुनक आकस्मिक मृत्युसँ राज्यमे अराजकता पसरबाक भय छलैक, तेँ यज्ञ पुरोहित ओ अन्य ऋषि लोकनि निमिक मृत शरीरकेँ ताधरिक हेतु तेल आ इत्रमे राखि देलथिन यावत् यज्ञान्त नहि भऽ गेल। ततः पर ऋषिलोकनि निमिक मृत देहकेँ मथि कऽ एकटा बालक उत्पन्न कयलनि। एहि बालकक नाम मिथि राखल गेलनि आ हिनके नाम पर जनक राजवंश द्वारा शासित प्रदेशकेँ मिथिला कहल गेलैक। ताहिसँ पूर्व एहि प्रदेशकेँ विदेह जनपद

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL ★ PATNA ★

कहल जाइत छलैक आ एकर राजालोकनि वैदेह कहबैत छलाह। वैदेह राजालोकनि सूर्यवंशी छलाह आ भारतीय इतिहासक प्रारम्भिक युगमे ई लोकनि आर्य सभ्यताक अग्रदूतक रूपमे अवतरित भेल छलाह।

पौराणिक साहित्य ओ वाल्मीकि रामायणक आधार पर निमिसँ लऽ कृति विदेह धरि जनक राजवंशक तिरपन गोट राजाक उल्लेख भेटैत अछि। एहिमे किछु राजा अत्यन्त प्रसिद्ध भेलाह।

राजा मिथि वीर योद्धा छलाह। ई हिमालयक तराइ क्षेत्रमे बसल पहाड़ी जनजातिकेँ युद्धमे पराजित कऽ ओकरा सभक उपद्रवकेँ शान्त कयलनि आ हिमालय पहाड़ लग एक नदीक किनारमे अपन राजधानी बनौलनि। जनक राजवंशक ई राजधानी जनकपुर कहौलक। संभवतः हिमालयक पवित्रता ओ ऋषि लोकनिक सान्निध्यक सुलभताक कारणेँ जनकपुरकेँ राजधानीक रूपमे विकसित कयल गेल छल। राजा मिथि भार्गव ऋषिसँ ज्ञानार्जन कयने छलाह।

जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह रामायण कालीन सीरध्वज जनक। सीता हिनके पुत्री छलथिन जनिक विवाह अयोध्याक राजा दशरथक पुत्र श्रीरामक संग भेल छलनि। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ओ जनकसुता सीताक कथा आइयो भारतीय संस्कृतिक अभिन्न अंग बनल अछि।

जनक राजलोकनि भारतेक इतिहासमे नहि, सम्पूर्ण विश्वक इतिहासमे जाज्वल्यमान ज्योतिपु ज जकाँ चमकैत अछि। हुनकालोकनिक समयमे राजतंत्रक जे आदर्श रूप उपस्थित भेल तकर उदाहरण कतहु दोसर ठाम भेटब दुर्लभ अछि। हिनकालोकनि सब विद्वान, आध्यात्मवादी, ब्रह्मज्ञानी ओ संसारक बन्धनसँ मुक्त विभूतिकेँ पाबि मिथिलेक भूमिटा नहि, सम्पूर्ण आर्यावर्त्त गौरवान्वित अछि। हिनकेलोकनिक देल मार्ग पर चलैत मिथिला अदौसँ भारतीय ज्ञान-विज्ञान, दर्शन ओ सांस्कृतिक गतिविधिक केन्द्रक रूपमे अपन सत्ता प्रतिष्ठापित कयने अछि।

याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक प्राचीनतम राजनीतिक चिन्तक, दार्शनिक ओ विधिकर्त्ता भऽ गेल छथि। ई मिथिलाक प्रसिद्ध दार्शनिक राजा कृति जनकक समयमे भेल छलाह। याज्ञवल्क्य संहिताक घोषणा अछि–'मिथिलास्थः स योगीन्द्रः क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीन्मुनीन्' अर्थात् योगी याज्ञवल्क्य मिथिलामे रहैत छलाह आ क्षण मात्रमे ध्यान लगौला उत्तर मुनि भऽ गेलाह।

याज्ञवल्क्यक पिताक नाम देवरात छलनि। हुनक माय महान ऋषि वैशम्पायनक बहिन छलथिन। हुनक पिता अन्नदान करबामे प्रसिद्ध भेलाह। तेँ हुनक एक गोट नाम वाजसनि सेहो छलनि। पिताक नामाधार पर याज्ञवल्क्यकेँ वाजसनेय सेहो कहल जाइत छनि।

याज्ञवल्क्य व्यासदेवक चारि गोट शिष्यसँ चारू वेदक अध्ययन कयने छलाह। अपन माम वैशम्पायनसँ ओ यजुर्वेदक शिक्षा प्राप्त कयने छलाह तथा उद्दालक आरूणि नामक तत्कालीन प्रौढ़ दार्शनिकसँ वेदान्तदर्शन पढ़ने छलाह। हिरण्यनाम नामक ऋषि हिनका योगशास्त्रक शिक्षा प्रदान कयने छलथिन। एहि तरहेँ याज्ञवल्क्य वेद, वेदान्त, दर्शन ओ योगविद्यामे पारंगत विद्वान भेलाह।

याज्ञवल्क्य जखन अपन माम वैशम्पायनसँ शिक्षा ग्रहण कऽ रहल छलाह, तखन अपन गुरूक सेवामे पूर्ण तत्पर रहैत छलाह। एकदिन गुरूपत्नी आ मामि हुनका तुलसीक अनबाक हेतु कहलथिन गाछ/त'। ओ तुलसी वृक्षकेँ तकैत सघन जंगल धरि गेलाह जतय हुनका एकटा नरभक्षी बाघसँ पाला पड़ि गेलनि। मुदा ओ कनेको विचलित नहि भेलाह आ तुलसी पादप लइये कऽ घुरलाह। बाघ हुनक बाट छोड़ि अन्य दिशामे पड़ा गेल।

अपार गुरूभक्तिक अछैतो एक दिन हुनक गुरू कोनो बात पर क्रुद्ध भऽ उठलथिन आ हुनका अपन देल विद्या घुरा देबाक आज्ञा देलथिन। याज्ञवल्क्य लगले गुरूक देल विद्याकेँ बोकरि देलनि। हुनक बोकारकेँ तित्तिर सभ चाटि गेल आ सैह तैत्तिरीय संहिताक रूपमे वर्त्तमान अछि। याज्ञवल्क्य अपन योगबलसँ

सूर्यक आवाहन कयलनि। सूर्य हुनका यजुर्वेदक शिक्षा देलथिन। यजुर्वेदक ई नवीन शाखा शुक्ल यजुर्वेद वा वाजसनेयि संहिताक रूपमे वर्त्तमान अछि।

याज्ञवल्क्यकेँ कात्यायनी एवं मैत्रेयी नामक दुइ गोट पत्नी छलथिन। ई एक गोट सद्‌गृहस्थ ओ सदुपाध्यायक जीवन वितबैत रहलाह। हिनक आश्रममे निरन्तर वेदध्वनि ओ स्वाहा शब्द्‌ गु जायमान रहैत छल। अध्ययन ओ अध्यापनक निरन्तरतासँ हिनक आश्रम सुशोभायमान रहैत छल। विद्याध्ययन समाप्त कऽ प्रस्थान कयनिहार स्नातकलोकनि हिनक आश्रमसँ निरन्तर जुड़ल रहैत छलाह।

कात्यायनी आदर्श गृहिणी छलीह। ई अपन पतिपरायणता, धार्मिकता ओ विलक्षण बुद्धिक हेतु प्रसिद्ध भेलीह। ई अपन घरक भीत, ओसारा एवं भूमिकेँ नीपि-ढौरि कऽ सजौने रहैत छलीह। चित्रकला, अरिपन ओ पाकशास्त्रमे ई निष्णात छलीह। पति, अन्य सम्बन्धी ओ अतिथिलोकनिक सेवा-परिचर्यामे लागलि ई मिथिलाक आदर्श गृहिणीक प्रतीकस्वरूपा छलीह।

याज्ञवल्क्यक दोसर पत्नी मैत्रेयी विदुषी ओ दार्शनिक प्रवृत्तिक छलीह। ओ सांसारिक दायित्वसँ मुक्त रहि निरन्तर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करबाक हेतु प्रयत्न करैत रहैत छलीह। एहि हेतु ओ अधिक काल पतिसँ ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पुछैत रहैत छलथिन। ध्यान, साधना ओ तप हिनक जीवनक अंग बनल रहलनि।

याज्ञवल्क्य अपन विद्याक बलेँ प्रचुर धनार्जन कयलनि आ ओहि सम्पत्तिसँ दीन-दुःखीक बीच दानो खूब कयलनि। हिनक साधु स्वभाव, सरलता, संवेदनशीलता ओ दानशीलताक अनेक कथा लोकमे प्रचलित अछि। एक बेर जखन हिमालय तराइ क्षेत्रमे अकाल पड़ि गेलैक तँ ई अपन पत्नीक समस्त स्वर्णाभूषण बेचि लोकसेवामे लगा देलनि।

याज्ञवल्क्य जाहि विदेहराज जनकक समकालीन छलाह, हुनक सभामे समय-समय पर जाइत-अबैत रहैत छलाह। जनकराज स्वयं ब्रह्मज्ञानक जिज्ञासु रहथि। याज्ञवल्क्यसँ भेट भेलापर ओलोकनि ब्रह्म, आत्मा, जगत, मृत्यु, पुनर्जन्म, मुक्ति आदि विविध विषय पर परस्पर वार्त्तालाप कयल करथि। याज्ञवल्क्यक

ब्रह्मज्ञानसँ जनक संतुष्ट भऽ हुनका अपन कुल गुरू आ पुरोहित बना लेने छलथिन। एक बेर अपन कुलगुरूकेँ आर्यावर्तक श्रेष्ठ ज्ञानी प्रमाणित करबाक उद्देश्यसँ जनक एक गोट बहुदक्षिणा यज्ञ कयलनि। एहि यज्ञमे कुरू, पांचाल आदि देशक विद्वान शास्त्रार्थक हेतु एकत्र भेलाह। जे विद्वान सर्वश्रेष्ठ घोषित होइतथि हुनका जनक स्वर्णमंडित सींघवला एक हजार गाय दान करबाक हेतु प्रस्तुत छलाह। शास्त्रार्थ प्रारम्भ होयबासँ पहिनहि याज्ञवल्क्य अपन शिष्य लोकनिकेँ सभटा गायकेँ हाँकि कऽ अपन आश्रम लऽ जयबाक आदेश देलथिन। शिष्यलोकनि गाय सभकेँ लऽ चलि देलनि। मुदा देश-देशसँ आयल ब्रह्मवेत्ता विद्वानमंडलीकेँ हुनक ई काज असंगत बुझना गेलनि। शास्त्रार्थ प्रारम्भ भेल। एहि शास्त्रार्थमे जरतकवि अतिभाग, उसस्त चक्रायण, कहील कोशिकतेय, गार्गी वाचकन्वी, उद्दालक आरूणि, विदग्ध, शाकल्य आदि अनेक ब्रह्मवेत्ता ऋषि ओ गार्गी सदृश विदुषी याज्ञवल्क्य पर प्रश्न वर्षा करैत रहलीह। याज्ञवुल्क्य अपन उत्तरसँ सभकेँ सन्तुष्ट कऽ सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता घोषित भेलाह। ई कथा वृहदारण्यकोपनिषद्मे अनुस्यूत अछि। एहि उपनिषद्मे जनक ओ याज्ञवल्क्य बीच अनेक बेर दार्शनिक वार्त्तालाप होयबाक दृष्टान्त सेहो भेटैत अछि। ई दुनू राजर्षि ओ महर्षि जखन परस्पर वार्त्तालाप पर बैसैत छलाह तखन याज्ञवल्क्य जनककेँ राजाक सम्मान दैत छलथिन आ जनक याज्ञवल्क्यकेँ महर्षिक। शुक्ल यजुर्वेद आ शतपथ ब्राह्मण याज्ञवल्क्यक कालजयी कृति अछि।

– डॉ० इन्द्रकान्त झा

प्रश्न ओ अभ्यास

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) जनक राजवंशक संस्थापक छलाह

(क) निमि जनक (ख) मरीचि

(ग) कश्यप (घ) विश्वनाथ

(ii) जनक राजवंशक राजधानी कहौलक

(क) काठमांडू (ख) जनकपुर

(ग) सिरहा (घ) दरभंगा

(iii) जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह

(क) सीरध्वज जनक (ख) मिथि

(ग) इक्ष्वाकु (घ) तीनूमे सँ क्यो नहि।

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) जनक राजवंश पर एकटा संक्षिप्त निबन्ध लिखू।

(ii) जनक राजवंशक प्रमुख राजा सभक परिचय दिअ।

(iii) मिथिलाक नामकरण कोना भेल ?

(iv) राजा मिथि कोना राज्यक स्थापना कयलनि ?

(v) याज्ञवल्क्यक परिचय दिअ।